# मधु आचार्य 'आशावादी' की कहानियों में नारी संघर्ष और नारी सशक्तिकरण : एक विवेचनात्मक अध्ययन

श्रीमती मुकेश बलवदा

डॉ. पिंकी पारिक

1. शोधार्थी वनस्थली, विद्यापीठ, राजस्थान

2. शोध निर्देशिका व सहायक आचार्य, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सदियों से विश्व की आधी आबादी अभिशप्त, कुंठित, उपेक्षित और अपमानित जीवन जीने को बाध्य रही है। नारी परिवार तथा समाज दोनों के विकास में अपना योगदान देती है। वह शिक्षित हो या अनपढ़ अपने परिवार तथा समाज को आदर्श बनाने में अपना तन–मन सब कुछ समर्पित कर देती है। इसी कारण नारी को आदरणीय माना जाता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था विभिन्न वर्गों और विभिन्न वर्णों में विभाजित रही है। किसी भी वर्ण, जाति, वर्ग का अवलोकन किया जाए तो नारी आज भी शारीरिक और मानसिक शोषण भोग रही है। समाज में उसे जिंदगीभर पुरुष के अधीन रहना पड़ रहा है। उसे अपनी अस्मिता और स्वतत्रंता की सदा ही कुर्बानी देनी पड़ी है। आज की नारी चाहे पढ़–लिख कर आत्मनिर्भर ही क्यों न बन जाए, उसे पुरुष के समान स्वतंत्रता तथा अधिकार प्राप्त नहीं हैं।

ऐसा नहीं है कि नारी की हमेशा ही यह स्थिति रही हो। विभिन्न धर्मग्रंथों के अनुसार प्राचीन काल में भारतीय समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है और भारतीय संस्कृति में नारी की महत्ता को उच्च स्थान दिया गया है। धर्मग्रंथ नारी को गृहस्थाश्रम का मूल आधार मानते हैं। इसी कारण प्राचीन काल में भारतीय समाज में नारी को विशिष्ट और गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है व पुरुष से भी ज्यादा नारी मर्यादा को उत्कृष्ट माना गया है। हालांकि, समय के साथ सामाजिक मानसिकता में निरंतर परिवर्तन होता रहा है और उसके साथ ही नारी की सामाजिक, मानसिक, आर्थिक समस्याएं भी बदलती रही हैं।

हालांकि, बींसवीं शताब्दी में भी नारी जागृति की लहर चली और अनेक राष्ट्रों में नारी को कानूनन मानवीय अधिकार प्राप्त होने लगे और उसके स्वतंत्र अस्तित्व को

स्वीकारा जाने लगा। इस काम में सबसे बड़ा योगदान हमारे साहित्यकारों का रहा है। भारतीय लेखकों ने नारी समस्याओं पर हमेशा ही अपनी लेखनी से कड़ा प्रहार किया है। आधुनिक युग के हिंदी कथा साहित्य में भारतीय नारी के विविध रूपों को सामने लाया गया है। काव्य, उपन्यास, नाटक, कहानी आदि विधाओं में नारी के मनोसंघर्ष को बखूबी उभारा गया है। हिंदी साहित्य का असर राजस्थानी साहित्य पर भी पड़ा। राजस्थानी कहानीकारों की रचनाओं में भी नारी संघर्ष को मुखर आवाज दी है। ऐसे राजस्थानी कहानीकारों में मधु आचार्य 'आशावादी' का नाम प्रमुख रूप से उभर कर हमारे सामने आता है।

मधु आचार्य 'आशावादी' ने अपनी राजस्थानी कहानियों में नारी से संबंधित अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। आचार्य ने अपनी कहानियों में अपनें लेखन के माध्यम से समाज के विभिन्न पक्षों यथा सामाजिक, आर्थिक का नारी पर कैसे प्रभाव पडता है, इसका सूक्ष्मता से चित्रण किया है। भारतीय समाज में पारम्परिक मान्यताओं, रीति-रिवाजों, भेदभाव, संस्कृति आदि के नाम पर हमेशा नारी का शोषण हुआ है। नारी आज भी मां, बेटी, पत्नी, बहन, प्रेमिका, वैश्या के रूप में पुरुष के अधीन होकर जीवन जीने को अभिशप्त है। इस शोषण से मुक्ति के लिए वह आज भी संघर्ष कर रही है। वह अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए पुरुषवादी सत्ता से बराबर संघर्ष कर रही है। मधु आचार्य ने अपनी कहानियों में समाज में हो रहे सामाजिक संबंधों में बदलाव का चित्रण किया है और नारी के संघर्ष को एक सशक्त भूमिका में पेश किया है। यहां हम मधु आचार्य 'आशावादी' की कहानियों में व्यक्त स्त्री संघर्ष के प्रमुख आयामों को अध्ययन करेंगे।

'आशावादी' के कहानी संग्रह 'उग्यो चांद ढळयो जद सूरज' की कहानी 'करंता सो भरता' में दुर्गा नामक स्त्री पात्र के दुर्गा स्वरूप का चित्रण किया गया है। कहानी में हरदास नामक एक व्यक्ति के तीन बेटे मोहन, अशोक और आलोक हैं। तीनों बेरोजगार हैं। बेरोजगारी से तंग आकर बड़ा बेटा मोहन फांसी लगाकर आत्महत्या कर लेता है। अब हरदास को अपने छोटे बेटों की चिंता लगी रहती है जो दिन-रात शराब पीते हैं। ऐसे में कोई भी व्यक्ति अपनी बेटी की शादी उनसे करने को तैयार नहीं होता। हरदास उनकी शादी के लिए एक दलाल से बात करता है, लेकिन वह दलाल अस्सी हजार रुपए लेकर भाग जाता है। कहानी की मुख्य पात्र दुर्गा एक गरीब

घर की लड़की है। उसका पिता उसकी शादी हरदास के दोनों बेटों अशोक और आलोक से कर देता है। कुछ समय तक तो वो दोनों आराम से रहते हैं, लेकिन थोड़े दिनों बाद पत्नी पर किसका हक है, इस बात को लेकर लड़ाई करने लगते हैं। एक दिन दोनों भाई शराब पीकर घर आते हैं और दुर्गा पर हक को लेकर लड़ने–झगड़ने लगते हैं। दुर्गा दोनों को छुड़ाने की कोशिश करती है, लेकिन वो दोनों उसे धक्का देकर गिरा देते हैं। गिरने से दुर्गा के सिर से खून बहने लगता है। दुर्गा उन दोनों से बहुत दिनों से परेशान थी। जब वह खून देखती है तो उसे क्रोध आता है और वह दुर्गा का रूप धारण कर लेती है। इसके बाद वह पास में पड़ा फावड़ा लेकर अशोक और आलोक दोनों का सिर फोड़ देती है और घर से बाहर चली जाती है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बताया है कि नारी का किस तरह से शोषण होता है। पुरुष आज भी उसे संपत्ति मानकर उस पर अपना हक जमाना चाहता है। साथ ही इस कहानी में यह भी संदेश है कि जिस दिन नारी की सहन शक्ति खत्म हो जाती है, उस दिन वह अपने शोषण और अपमान का बदला लेने के लिए किसी से भी भिड़ सकती है चाहे फिर वो उसका पति ही क्यों न हो।

'उग्यो चांद ढळयो जद सूरज' कहानी संग्रह की कहानी 'चिड़पड़ो सुहाग' सुनिता नामक स्त्री के संघर्ष की कहानी है। सुनिता अमीर बाप की एक सीधी–सादी बेटी है। उसका पिता सुनिता की शादी अठारह वर्ष की आयु में रमेश नामक एक गरीब घर के युवक से कर देता है। पिता यह सोचता है कि बेटी गरीब घर में जाएगी तो उसका घर में रूतबा रहेगा। इसी रूतबे के लिए वह उसकी शादी में बहुत सारा दहेज भी देता है। शादी के कुछ समय तक तो सुनिता के ससुराल वाले उसे बहुत अच्छे से रखते हैं, लेकिन थोड़े दिनों बाद ही उसे दहेज के लिए प्रताड़ित करना शुरू कर देते हैं। वो सुनिता के साथ मारपीट करते हैं और उसे दूसरों के घरों में काम करने के लिए भेजते हैं। सुनिता के तीन वर्ष में ही तीन बच्चे हो जाते हैं और वह शारीरिक रूप से बहुत कमजोर हो जाती है। ऐसे में डॉक्टर सलाह देता है कि अगर ओर बच्चे हुए तो उसकी जान को खतरा हो जाएगा, लेकिन उसका पति और उसकी सास डॉक्टर की सलाह को अनसुना कर देते हैं। चौथा बच्चा पैदा होने के वक्त सुनिता की स्थिति बहुत नाजुक हो जाती है। उसकी जिंदगी को बचाने के लिए उसे खून चढ़ाना पड़ता है। सुनिता के पिता जब उसकी वह हालत देखते हैं तो बहुत दुखी होते हैं। सुनिता उन्हें पूरी बात बताती है तो वे सुनिता को अपने घर ले आते हैं। सुनिता

पर अत्याचार के मामले को लेकर उसके पति रमेश और उसके घरवालों को जेल भिजवा दिया जाता है। इतना ही नहीं सुनिता के पिता उसकी दूसरी शादी करवाते हैं। इस कहानी में लेखक ने दहेज प्रथा के दुष्परिणामों के साथ ही सामाजिक सशक्तिकरण को भी चित्रित किया है।

'उग्यो चांद ढळयो जद सूरज' कहानी संग्रह की कहानी 'बापड़ी कुण' में लिंग भेद का चित्रण किया गया है। कहानी के कथानक के अनुसार विनोद और लक्ष्मी की दो बेटियां हैं, विमला और कमला। विनोद और लक्ष्मी के शादी के पंद्रह वर्ष बाद भी जब लड़का पैदा नहीं होता है तो सास–ससूर और देवर–देवरानी उसे ताने मारने लगते हैं। वो लक्ष्मी के साथ मारपीट भी करते हैं। घरवालों के व्यवहार से तंग होकर विनोद और लक्ष्मी अपनी दोनों बेटियों को लेकर शहर चले जाते हैं। विनोद मजदूरी करता है तथा लक्ष्मी घर पर पापड़ बनाकर बेचने लगती है। वो दोनों अपनी बेटियों को पढ़ाते हैं। बड़ी बेटी विमला सीए बन जाती है और कमला भी 10 वीं कक्षा 90 प्रतिशत अंको से उतीर्ण करती है। विमला अपना अलग से ऑफिस खोल लेती है और वह अच्छा पैसा कमाने लगती है। एक दिन विमला की काकी उनके पास आती है और कहती है – ''घर के हालात अच्छे नहीं हैं, तुम हमारी मदद करो। मेरे बेटे ने बीकॉम कर रखी है, तुम उसे अपने पास नौकरी पर रख लो।'' तब विमला कहती है – '' काकी मैं अपनी मां से पूछकर बताऊंगी।'' तब उसकी काकी पश्चाताप करती हुई कहती है – ''हम लोगों ने लक्ष्मी को बहुत परेशान किया, लेकिन लक्ष्मी ने हार नहीं मानी। पैला बा बापड़ी ही अर अबै म्है बापड़ी बणगी।''

इस कहानी में लेखक ने समाज की पुरुषवादी मानसिकता का चित्रण करते हुए नारी सशक्तिकरण को दर्शाया है। लेखक ने कहानी के जरिए यह भी संदेश दिया है कि समाज में लड़का–लड़की बराबर हैं, उनमें भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

मधु आचार्य 'आशावादी' के कहानी संग्रह 'दो चोट्यां आळी छोरी' की कहानी 'दो चोट्यां आळी छोरी' में लिंग भेद और दाम्पत्योत्तर संबंधों का चित्रण किया गया है। यह रेणू नामक लड़की की कहानी है जिसकी शादी एक डॉक्टर से होती है। जब रेणू गर्भवती होती है तो डॉक्टर उसे कहता है कि उसे लड़का होना चाहिए। रेणू और उसकी मां को डॉक्टर की यह बात बुरी लगती है। रेणू की देखभाल की बहाना लेकर डॉक्टर उसे पीहर भेज देता है। एक माह गुजरने के बाद भी डॉक्टर व उसके घरवालों

का कोई फोन नहीं आता। रेणू का फोन भी वह नहीं उठाते तो रेणू को चिंता होने लगती है। रेणू उसी अस्पताल में काम करने वाले दूसरे डॉक्टर की पत्नी अनिला से बात करती है तो उसे पता चलता है कि डॉक्टर ने मेडिकल स्टूडेंट सुलोचना से शादी कर ली और अब वे दोनों शिमला घुमने गए हुए हैं। जब रेणू के बेटी पैदा होती है तो भी डॉक्टर का फोन नहीं आता। रेणू वकील के हाथों डॉक्टर को तलाकनामा भिजवा देती है। दोनों का तलाक हो जाता है। तलाक के बाद रेणू पढ़ाई करके सरकारी अध्यापक बन जाती है। कुछ वर्षों बाद एक दिन डॉक्टर का फोन आता है और वह अपनी गलती के लिए माफी मांगता हुआ कहता है – ''मैं बहुत बीमार हूं, जिस लड़की के लिए मैनें तुम्हें ठुकराया वह मुझे छोड़कर चली गई है, अब मैं अपनी गलती सुधारना चाहता हूं, तुम वापस लौट आओ।'' रेणू डॉक्टर से कहती है ''सॉरी रोंग नंबर।'' इस तरह रेणू के पात्र के जरिए कहानी में महिला सशक्तिकरण को भी दर्शाया गया है।

'दो चोट्यां आळी छोरी' कहानी संग्रह की कहानी 'अधूरो ब्याव' में अंतरजातीय विवाह के बाद नारी की व्यथा का चित्रण किया गया है। इस कहानी में रमेश उच्च वर्ण का और अमीर घर का लड़का है। वह कमला नामक एक युवती से प्रेम विवाह करता है। कमला बेहद गरीब और निम्न वर्ग की लड़की है। प्रेम विवाह के बाद जब कमला रमेश के घर आती है तो रमेश के घरवाले कमला को जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करके भला–बुरा कहते हैं। रमेश का परिवार इस शादी से खुश नहीं है इस कारण उस दिन उनके घर में खाना भी नहीं बनता। रात को रमेश की मां को हार्ट अटैक आ जाता है। इस घटना से कमला व्यथित हो जाती है और वह सुबह उठकर रमेश से कहती है – '' मैं तुम्हारे घर में अशांति का कारण नहीं बनना चाहती, इसलिए मैं अपने घर जा रही हूं। आप यह सोच लेना कि मैं अतिथि बनकर एक दिन के लिए तुम्हारे घर आई थी।''

यह कहकर कमला अपने घर आ जाती है और अपनी मां को सारी बात बताती है। वह अपनी मां से कहती है – '' अब आप फिर से मेरी शादी की कोशिश मत करना। मेरी शादी हो चूकी है और ये मेरी मांग का सिन्दूर ही मेरे 'अधूरे ब्याव' की निशानी है।'' इस तरह कहानी में यह दर्शाया गया है कि अंतरजातीय विवाह के दुष्परिणाम पुरुष से ज्यादा महिला को झेलने पड़ते हैं।

'दो चोट्यां आळी छोरी' कहानी संग्रह की 'किण विध घर आवूं' कहानी में शराबी पति और जुआरी बेटे से पीड़ित एक नारी की व्यथा का चित्रण है। कहानी की मुख्य पात्र लक्ष्मी है जो अमेरिका में एक घर में काम करती है। वह रात को सोचती है कि उसे अमेरिका क्यों आना पड़ा। लक्ष्मी का पति शराब पीता था तो उसने बेटे रमेश की पढ़ाई छुड़वाकर उसे सैलून में काम पर लगा दिया ताकि घर खर्चा चल सके, लेकिन रमेश सटोरियों के चक्कर में आकर शराब पीने और सट्टा लगाने लग जाता है और धीरे–धीरे कर्ज में डूब जाता है। लक्ष्मी को कर्ज चुकाने के लिए ज्यादा पैसों की आवश्यकता होती है और वह काम करने अमेरिका चली जाती है। अमेरिका से वह कर्ज चुकाने के लिए पैसा भेजती है। लक्ष्मी के बेटे रमेश की शादी हो जाती है और एक लड़का भी हो जाता है, लेकिन रमेश ना तो शराब छोड़ता और ना ही सट्टा लगाना। एक दिन उसकी पत्नी परेशान होकर घर छोड़कर चली जाती है। लक्ष्मी को जब यह बात पता चलती है तो वह बहू को फोन करती है। बहू उसे कहती – ''मैं इन बाप बेटों के साथ नहीं रह सकती, आप यहां आ जाओ तो मैं आपके साथ रहने को तैयार हूं।'' तब लक्ष्मी सोचती है कि 'किण विध घर आवूं' अर्थात मैं घर कैसे आऊं। यदि मैं घर आ गई तो मालिक मुझे पूरे साल के पैसे नहीं देगा।

मधु आचार्य 'आशावादी' के हेत रो हेलो' कहानी संग्रह की कहानी 'हेत रो हेलो' में अन्तर्जातीय प्रेम विवाह के कारण नारी को होने वाले कष्टों का चित्रण किया गया है। इसमें नारी के प्रति उस सामाजिक दृष्टिकोण का भी हवाला दिया गया है जिसमें पति की मौत होने पर औरत को ही जिम्मेदार माना जाता है। इस कहानी में श्याम नामक युवक अनिता से अंतरजातीय प्रेम विवाह करता है, लेकिन शादी के कुछ माह बाद एक ट्रेन हादसे में श्याम की मृत्यू हो जाती है। श्याम के घरवाले अनिता को यह कहकर घर से बाहर निकाल देते हैं कि श्याम की मृत्यू तुम्हारी वजह से हुई है। श्याम का दोस्त सुनिल जो नारी का सम्मान करता है वह अनिता से शादी कर लेता है। सुनिल के घर वाले अनिता को सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। इस प्रकार इस कहानी में नारी का अपमान करने वाले तथा नारी का सम्मान करने वाले दोनों पक्षों को बखूबी दर्शाया गया है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मधु आचार्य 'आशावादी' की राजस्थानी कहानियों में नारी शोषण के चित्रण के साथ–साथ नारी सशक्तिकरण को भी बखूबी दर्शाया गया है। मधु आचार्य की कहानियां नारी संघर्ष और समस्याओं का जीवंत

दस्तावेज हैं। मधु आचार्य ने इस बात को प्रमुखता के साथ इंगित किया है कि चाहे आज भी नारी शोषित और पीड़ित हो, लेकिन फिर भी वह हर मुश्किल का डटकर सामना करती नजर आती है। आज वह आत्मनिर्भर होकर अपने आप को मजबूती से पेश करने लगी है। वह अपने को विवशता के घेरे से बाहर निकालकर खुली हवा में सांस लेने लगी है।

संदर्भ सूची-


'उग्यो चांद ढळयो जद सूरज' कहानी संग्रह- 1. करंता सो भंरता, पृष्ठ संख्या 43

2. चिड़पड़ो सुहाग, पृष्ठ संख्या 55

3. बापड़ी कुण पृष्ठ, संख्या 83

'दो चोव्यां आळी छोरी' कहानी संग्रह- 4. दो चोव्यां आळी छोरी, पृष्ठ सं. 9

5. अधूरो ब्याव, पृष्ठ संख्या 29

6. किण विध घर आवूं, पृष्ठ सं. 49

'हेत रो हेलो' कहानी संग्रह- 7. हेत रो हेलो, पृष्ठ संख्या 18